डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number - 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 2 दिनांक - 8-07-2020

विषय- संस्कृत (रत्नावली)

रत्नावली नाटिका के आधार पर वासवदत्ता का चरित्र-चित्रण

वासवदत्ता राजा उदयन की स्वीया नायिका है । उज्जैनी के नृपति महासेन की पुत्री वासवदत्ता उत्तम कुल को सुशोभित करने वाली है । इसमें स्वीया के संपूर्ण लक्षण विद्यमान है । विनयशीलता, ऋजुता और शील की वह साक्षात मूर्ति है । राजा उदयन के प्रति उसमें असीम श्रद्धा है । राजा उदयन के साथ ही वह अनंग की उपासना करती है । उसकी विनयशीलता की पराकाष्ठा उस समय देखी जाती है, जब राजा उद्यान को चित्रफलक के साथ अभिसार के प्रसंग में रंगे हाथ पकड़ती है । वह राजा को कुछ भी बुरा भला नहीं करती । न उसकी जिह्वा अंगारों की वर्षा करती है ना आंखें विष उड़ेलती है । चित्रफलक की घटना को सत्य जानकर भी केवल 'शिरःशूल' के ब्याज से अपने क्रोध को प्रकट कर उद्यान से लौट आती है । उसकी क्रोध की लपटों में विनयशीलता की शीतलता दिखाई पड़ती है ।

कुल और पति की प्रतिष्ठा के प्रति समर्पित वासवदत्ता परिजनों के समक्ष राजा का अपमान नहीं करती है । पति की प्रतिष्ठा के लिए यौगंधरायण कि प्रत्येक बात मान लेती है । उसे जब यह ज्ञात होता है कि रत्नावली के साथ उदयन का विवाह हो जाने पर उसका पति चक्रवर्ती सम्राट होगा तो वह प्रसन्नता और हर्ष के साथ अपने आभूषणों से सजाकर रत्नावली को उदयन के हाथों में समर्पित कर देती है । इतना ही नहीं वह उदयन से निवेदन करती है कि रत्नावली को वह इतना प्यार की मदिरा पिला दे कि वह अपने पितृकुल को भूल जाए ।

वासवदत्ता दया की प्रतिमूर्ति है । पग-पग पर उसकी प्रशंसा उसकी सेविकाएँ भी करती रहती है । चित्रफलक की घटना के पश्चात सागरिका को न कठोर दंड देती है ना उस पर वाग्वज्र प्रहार ही करती है । अभिसार की घटना के बाद यद्यपि सागरिका को कारागार में डाल देती है परंतु अग्निकांड की घटना के समय उसकी रक्षा के लिए राजा उदयन से वह स्वयं निवेदन करती है । विदूषक के भी अपराध क्षमा कर उसका उचित सत्कार करती है।

वासवदत्ता ना केवल आंतर सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है वरन शारीरिक सौंदर्य में रति को भी लज्जित कर देती है । राजा उसके गुणों के साथ-साथ उसके रूप की प्रशंसा करते हुए नहीं थकते हैं । वासवदत्ता के गुणों के कारण राजा बार-बार उसका अनुनय-विनय करते रहते हैं । वह भी राजा उदयन के प्रेम में इतनी पड़ी है कि अभिसार की घटना के समय राजा से अप्रसन्न होकर थोड़ी दूर लौट आने के बाद पश्चाताप करती है । वह स्वयं अपराधी पति

को भी मनाना चाहती है । पति प्रेम कि तृषा को दूर करने के लिए वह सपत्नी जैसे विष का सहर्ष पान कर लेती है।

वासवदत्ता अपने पितृकुल के प्रति समुचित आदर प्रदर्शित करती है । उज्जैनी से आए हुए ऐन्द्रजालिक को भी उचित सम्मान देने के लिए उसके इंद्रजाल को बड़े ही मनोयोग से देखती है । मामा के यहां से आए हुए वसुभूति के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए सम्मान व्यक्त करने के लिए उदयन को वसुभूति के पास भेजती है।

वासवदत्ता एक आदर्श पत्नी के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करती है । एक भारतीय कुलीन नारी के संपूर्ण गुण वासवदत्ता के चरित्र में देखे जा सकते हैं । रत्नावली नाटिका की वासवदत्ता प्रेम त्याग और कुलीनता की प्रतिमूर्ति है ।